तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार।
महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार।। ८ ।।

सतगुरु के मिलने पर इस छल वाली माया की शक्ति नहीं चलेगी। वह किसी रहस्य को नहीं छिपा सकेगी। महामतिजी कहते हैं कि ऐसी माया के ब्रह्माण्ड में ही अपने प्रीतम के साथ में खेलती और अखण्ड परमधाम के सुख लेती हूं।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ २६२ ॥

राग गौड़ी

रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या।। १ ।।

महामतिजी अब अपने आप को कहते हैं कि तुम दुनियां को क्या उपदेश देते हो? यह तो सारे बड़े चतुर हैं। अपने काम को सयाने हैं। यह अपनी ही माया की मस्ती में डूबे हुए मनमाना काम करते हैं।

रे हो याही फंद में साध संतरी, पुकार पुकार पछताना।
कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना।। २ ।।

इस माया के फन्द से निकालने के लिए बहुत से साधु-सन्त पुकार करके हार गए। इसमें कोई-कोई कहते हैं कि यह दुनियां बहुत बुरी है। कोई कहता है भली है, तुम इस पर ध्यान न दो।

रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना।। ३ ।।

तू बहुत दिन तक ज्ञान के गुमान में उलझी रही। अब चुप करके बैठ जाओ। तू किसी की निन्दा या महिमा मत कर।

रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना।
अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या।। ४ ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपने तरफ देख और कुछ अपने लिए कर। देर हो रही है। तू अपने को इसमें उलझाना नहीं। अब तू इसे हर तरह से छोड़ दे। तेरे हाथ में आया हुआ अवसर निकला जा रहा है।

एही सब्द एक उठे अवनी में, नहीं कोई नेह समाना।
पेहेचान पिउ तूं अछरातीत, ताही से रहो लपटाना।। ५ ।।

इस पृथ्वी में एक ही बात सुनाई देती है कि प्रेम के बिना कुछ नहीं है, इसलिए तू अपने धनी अक्षरातीत की पहचान कर उसी के प्रेम में लिपटी रह।

अहनिस आवेस हुअड़ा अंग में, फिरया दिलड़ा हुआ दिवाना।
महामत प्रेमें खेले पिया सों, ए मद है मस्ताना।। ६ ।।

हे मेरी आत्मा! तू रात-दिन धनी के आवेश को मेरे अंग में भर दे जिससे मेरा यह दिल प्रीतम से मिलने को दीवाना हो जाए। महामतिजी कहते हैं कि जब मैं प्रीतम के साथ खेलती हूं तो वह मस्ती अलग ही किस्म की होती है।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ २६८ ॥